

श्रीमद्भागवत स्कन्ध 8 अध्याय 3: गजेन्द्र की समर्पण-स्तुति

14 September 2026



जल से उठती है समर्पण की एक पुकार, और आकाश से स्वयं भगवान उतरते हैं — गरुड़ पर आरुढ़, हाथ में चक्र लिए — मरणासन्न गजराज को उठाने और मृत्यु के मुख को चीर देने के लिए।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

श्रीमद्भागवत विज्ञम में आपका पुनः स्वागत है — श्रीमद्भागवत महापुराण की पवित्र कथाओं और शिक्षाओं की एक भक्तिमयी यात्रा। आठवें स्कन्ध का यह तृतीय अध्याय शास्त्रों की सबसे प्रिय स्तुतियों में से एक हमें देता है — गजेन्द्र की उस निराकार, सर्वव्यापी परमात्मा के प्रति समर्पण-स्तुति, जो प्रत्येक जीव का आश्रय है।

अध्याय की जानकारी

- ग्रन्थ: श्रीमद्भागवत महापुराण
- स्कन्ध: 8 (आठवाँ स्कन्ध)
- अध्याय: 3 (तृतीय अध्याय)

- अध्याय शीर्षक: गजेन्द्र की समर्पण-स्तुति
- मुख्य वक्ता: श्रीशुकदेव गोस्वामी, राजा परीक्षित से कहते हुए — स्तुति स्वयं गजराज गजेन्द्र के द्वारा कही गई
- मुख्य श्रोता: राजा परीक्षित
- मुख्य स्थल: क्षीरसागर में स्थित त्रिकूट पर्वत पर वरुण के उद्यान का सरोवर
- केन्द्रीय विषय: ग्राह के मुख में फँसा और मृतप्राय गजराज परम भगवान की गहन समर्पण-स्तुति करता है, और भगवान तत्काल प्रकट होकर उसका उद्धार करते हैं
- प्रमुख श्लोक श्रेणी: स्कन्ध 8, अध्याय 3, श्लोक 1-33
- मुख्य संस्करण: गीता प्रेस श्रीमद्भागवत महापुराण

पिछले अध्याय का सन्दर्भ

द्वितीय अध्याय में हाथियों के झुंड का शक्तिशाली नायक वरुण के उद्यान के सरोवर में जल पीने के लिए उतरा और एक बलवान ग्राह ने उसका पैर पकड़ लिया। हज़ार वर्षों तक दोनों में संघर्ष चलता रहा, यहाँ तक कि गजराज की शक्ति क्षीण हो गई और उसने समझ लिया कि न स्वजन और न अपना बल उसे बचा सकता है। दैव के फंदे में फँसे हुए उसने संकल्प किया कि वह — यद्यपि मात्र एक पशु है — फिर भी सबके परम आश्रय परमात्मा की शरण में जाएगा।

पूर्वजन्म की स्मृति से उठी स्तुति

श्रीशुकदेव राजा परीक्षित से कहते हैं कि विवेक के बल से अपने मन को हृदय में स्थिर करके गजराज ने एक श्रेष्ठ स्तुति का जप आरम्भ किया — वह स्तुति जिसे उसने पूर्वजन्म में, जब वह मनुष्य राजा इन्द्रद्युम्न था, कण्ठस्थ किया था। यद्यपि अब वह पशु-शरीर में था और स्पष्ट रूप से यह भी स्मरण नहीं कर पा रहा था कि वह कौन रहा है, फिर भी वे पवित्र शब्द उस पूर्व भक्तिमय जीवन से उसके भीतर उमड़ पड़े।

श्रीबादरायणिरुवाच

एवं व्यवसितो बुद्ध्या समाधाय मनो हृदि ।

जजाप परमं जाप्यं प्राग्जन्मन्यनुशिक्षितम् ॥ १ ॥

श्रीबादरायणिरुवाच एवं व्यवसितो बुद्ध्या समाधाय मनो हृदि जजाप परमं जाप्यं प्राग्जन्मन्यनुशिक्षितम्

अर्थ: श्रीशुकदेव ने कहा — इस प्रकार बुद्धि से निश्चय करके और मन को हृदय में स्थिर करके गजराज ने उस श्रेष्ठ स्तुति का जप आरम्भ किया, जिसे उसने अपने पूर्वजन्म में सीखा था। (स्कन्ध 8, अध्याय 3, श्लोक 1)

इस श्लोक में एक शान्त विस्मय है। एक जन्म में साधी गई भक्ति नष्ट नहीं होती; वह जीव के भीतर प्रतीक्षा करती है और सबसे बड़े संकट की घड़ी में पुनः उठ खड़ी होती है। जो इन्द्रद्युम्न ने कभी राजा के रूप में सीखा था, वही गजेन्द्र अब हाथी के रूप में स्मरण करता है, और वही उसके उद्धार का साधन बन जाता है।



अपने हृदय में मन को स्थिर कर, गजराज वह पवित्र स्तुति सुनाना आरम्भ करता है जिसे उसने पूर्वजन्म में मानव राजा इन्द्रधुम्न के रूप में सीखा था (श्लोक 1)।

मन को हृदय में स्थिर करके गजराज उस पवित्र स्तुति का जप आरम्भ करता है, जिसे उसने पूर्वजन्म में मनुष्य राजा इन्द्रधुम्न के रूप में सीखा था (श्लोक 1)।

ॐ से सूचित परमात्मा को नमस्कार

स्तुति स्वयं उद्धार की याचना से नहीं, अपितु शुद्ध आराधना से आरम्भ होती है। गजेन्द्र उस परम भगवान को नमस्कार करता है जो मंगलमय प्रणव 'ॐ' से सूचित है — वह पुरुष जिसके कारण यह देह चेतन प्रतीत होती है, सबका आदि बीज, जो प्रकृति और पुरुष के रूप में प्रत्येक प्राणी में प्रवेश करता है।

श्रीगजेन्द्र उवाच

ॐ नमो भगवते तस्मै यत एतच्चिदात्मकम् ।

पुरुषायादिबीजाय परेशायाभिधीमहि ॥ २ ॥

श्रीगजेन्द्र उवाच ॐ नमो भगवते तस्मै यत एतच्चिदात्मकम् पुरुषायादिबीजाय परेशायाभिधीमहि

अर्थ: गजराज ने प्रार्थना की — हम उस परम भगवान का, जो 'ॐ' से सूचित है और जिसकी उपस्थिति से यह देह चेतनायुक्त प्रतीत होती है, ध्यानपूर्वक नमस्कार करते हैं — वे आदि कारण हैं, मूल बीज हैं, समस्त के परम शासक हैं। (स्कन्ध 8, अध्याय 3, श्लोक 2)

यहाँ से स्तुति परमतत्त्व के स्वरूप पर एक निरन्तर ध्यान के रूप में विकसित होती है। गजेन्द्र उस स्वयंसिद्ध भगवान की शरण लेता है जिनमें यह विश्व स्थित है, जिनसे यह उत्पन्न होता है, जो इसे धारण करते हैं, जो स्वयं ही यह विश्व हैं और फिर भी इससे तथा इसके अव्यक्त कारण से परे हैं। वह उस एक की महिमा गाता है जो प्रलय के अगाध अन्धकार से परे प्रकाशित होते हैं, जिनकी वास्तविकता को देवता और ऋषि भी पूर्णतः नहीं समझ पाते — जैसे एक सामान्य दर्शक अनेक वेषों के नीचे छिपे अभिनेता को पहचान नहीं पाता।



जल से सूँड उठाए गजराज पवित्र ॐ अक्षर से सूचित निराकार परम भगवान को, जो समस्त के आदि कारण हैं, प्रणाम करता है (श्लोक 2-6)।

जल से सूँड उठाए हुए गजराज प्रणव 'ॐ' से सूचित उस निराकार परम भगवान को, समस्त के आदि कारण को, नमस्कार करता है (श्लोक 2-6)।

नाम और रूप से परे उस एक का स्तवन

गजेन्द्र की स्तुति और ऊँची उठती है। वह अनन्त शक्तियों और अद्भुत लीला वाले उस सर्वपूर्ण भगवान को नमस्कार करता है — जो निराकार होते हुए भी असंख्य रूपों वाले हैं, जिनमें न जन्म है न कर्म, न नाम है न रूप जब निर्गुण रूप में विचारे जाएँ, जिनमें न पुण्य है न पाप, और फिर भी जो अपनी इच्छा से समय-समय पर जगत के कल्याण हेतु इन्हें धारण करते हैं। वह उस एक को प्रणाम करता है जो वाणी और मन की पहुँच से परे हैं, जो केवल भक्ति और वैराग्य से शुद्ध हुए हृदय के द्वारा ही प्राप्य हैं; जो स्वयं ज्ञानस्वरूप, अभेद और शान्त हैं; जिस स्रोत की ओर समस्त शास्त्र नदियों की भाँति बहते हैं; और जो प्रकृति के गुणों रूपी अरणि में छिपी चेतना की अग्नि हैं, जो प्रबुद्ध जनों के हृदय में प्रज्वलित होती है।

गजेन्द्र इसे सबसे स्पष्ट रूप से कहता है, ऐसे शब्दों में जो परमतत्त्व को हर सांसारिक चिह्न से मुक्त कर देते हैं:

न विद्यते यस्य च जन्म कर्म वा
न नामरूपे गुणदोष एव वा ।
तथापि लोकाप्ययसम्भवाय यः
स्वमायया तान्यनुकालमृच्छति ॥ ८ ॥
तस्मै नमः परेशाय ब्रह्मणेऽनन्तशक्तये ।
अरूपायोरूपाय नम आश्चर्यकर्मणे ॥ ९ ॥

न विद्यते यस्य च जन्म कर्म वा न नामरूपे गुणदोष एव वा तथापि लोकाप्ययसम्भवाय यः स्वमायया तान्यनुकालमृच्छति

तस्मै नमः परेशाय ब्रह्मणेऽनन्तशक्तये अरूपायोरूपाय नम आश्चर्यकर्मणे

अर्थ: उनका न कोई भौतिक जन्म है न कर्म, न नाम है न रूप, न पुण्य न पाप — फिर भी इस जगत की रचना और संहार के लिए वे युग-युग में अपनी ही सृजन-शक्ति से इन्हीं को धारण करते हैं। गजेन्द्र उस अनन्त-शक्तिसम्पन्न परम शासक को नमस्कार करता है, जो स्वयं निराकार होते हुए भी अनेक रूपों में विस्तृत हैं और जिनका प्रत्येक कर्म एक आश्चर्य है। (स्कन्ध 8, अध्याय 3, श्लोक 8-9)

वह उस अपार करुणामय भगवान की महिमा गाता है जो उसके जैसे पशुतुल्य जीवों को बाँधने वाली अज्ञान की डोरियों को काट देते हैं, और जो पूर्णतः निरासक्त होने के कारण देह, सन्तान, धन और स्वजनों में आसक्त लोगों को अप्राप्य हैं — फिर भी जिनका मुक्त जीव सदा चिन्तन करते हैं और जो उन्हें अविनाशी दिव्य देह तक का वरदान देते हैं जिसमें वे उनके साथ विहार करें। जो केवल उन्हीं में अनन्य रूप से लगे हैं, गजेन्द्र गाता है, वे कोई वर नहीं माँगते, अपितु उनकी परम मंगलमयी कथाओं का गान करते हुए आनन्द के सागर में मग्न रहते हैं।

“मैं केवल जीवित रहने की कामना नहीं करता”

अब स्तुति अपने सबसे मार्मिक मोड़ पर पहुँचती है। गजेन्द्र घोषित करता है कि भगवान न देवता हैं न असुर, न मनुष्य न पशु, न स्त्री न पुरुष न नपुंसक, न गुण न कर्म, न कारण न कार्य — वे वही हैं जो सबके निषेध के पश्चात् शेष रह जाते हैं, और फिर भी जो सब कुछ हैं। और तब वह फँसा हुआ गजराज एक विस्मयकारी बात कहता है: वह ग्राह की पकड़ से छूटने की प्रार्थना ही नहीं करता।

नायं वेद स्वमात्मानं यच्छक्त्याहंधिया हतम् ।

तं दुरत्ययमाहात्म्यं भगवन्तमितोऽस्म्यहम् ॥ २९ ॥

नायं वेद स्वमात्मानं यच्छक्त्याहंधिया हतम् तं दुरत्ययमाहात्म्यं भगवन्तमितोऽस्म्यहम्

अर्थ: भगवान की माया-शक्ति से उत्पन्न अहंकार के द्वारा जिसकी बुद्धि अभिभूत है, वह जीव अपने वास्तविक स्वरूप को भी नहीं जान पाता। मैं उस परम भगवान की शरण लेता हूँ, जिनकी महिमा अलंघ्य है। (स्कन्ध 8, अध्याय 3, श्लोक 29)

वह जीवन नहीं, अपितु मुक्ति चाहता है — उस अज्ञान के आवरण का हटना जो आत्मा को देह से बाँधता है। “इस हाथी-जीवन से मेरा क्या प्रयोजन,” वह विचार करता है, “जो भीतर-बाहर अज्ञान से आच्छादित है? मैं केवल उस अज्ञान का विदारण चाहता हूँ, जिसे मात्र समय का बीतना नहीं, अपितु केवल आत्मज्ञान ही दूर कर सकता है।” यह समर्पण की शुद्ध प्रार्थना है — जगत से कुछ न माँगते हुए भगवान से सब कुछ माँगना।



अब केवल जीवित रहने के लिए नहीं, गजराज केवल अज्ञान के आवरण के हटने की याचना करता है और उन परम भगवान की पूर्ण शरण लेता है जिनकी महिमा अनुपम है (श्लोक 25-29)।

अब केवल जीवित रहने की प्रार्थना न करते हुए, गजराज केवल अज्ञान के आवरण के हटने की कामना करता है और उस परम भगवान की पूरा शरण लेता है जिनकी महिमा को कोई पार नहीं कर सकता (श्लोक 25-29)।

जिनका कोई आंशिक रूप नहीं, वे भगवान प्रकट होते हैं

तत्पश्चात् श्रीशुकदेव इस स्तुति के उत्तर के विषय में एक गूढ़ बात बताते हैं। चूँकि गजेन्द्र ने भगवान की स्तुति किसी विशेष देवता के रूप में नहीं, अपितु किसी एक रूप से रहित निराकार, सर्वव्यापी परमतत्त्व के रूप में की थी, इसलिए अपने-अपने विशिष्ट रूपों से तादात्म्य रखने वाले बड़े देवता — ब्रह्मा, शिव आदि — नहीं आए। स्वयं परम भगवान श्रीहरि, जो समस्त देवताओं की आत्मा और प्रत्येक रूप के सार हैं, उसी स्थान पर प्रकट हुए।

स्तुति सुनकर और गजराज का कष्ट देखकर विश्व के स्वामी अपने वाहन पक्षिराज गरुड़ पर आरूढ़ हुए और चक्र उठाए हुए, स्तवन करते हुए देवताओं के साथ, शीघ्रता से वहाँ पहुँचे जहाँ गजराज पड़ा था।

यहीं इस अध्याय के पीछे की गहरी शिक्षा छिपी है। जब तक यह स्तुति की गई, गजराज हर लघु आश्रय से रहित हो चुका था — न उसका झुंड उसकी सहायता कर सका, न उसका अपना बल शेष रहा, और उसने किसी एक देवता को नाम लेकर नहीं पुकारा। क्योंकि उसका समर्पण हर आंशिक रूप से परे, केवल परमतत्त्व तक पहुँचा, इसलिए अधिष्ठाता देवताओं ने, यह अनुभव करते हुए कि यह पुकार उनके अपने पद से ऊपर सम्बोधित है, कोई कदम नहीं उठाया; केवल स्वयं परमेश्वर ही इसका उत्तर दे सकते थे। ग्राह की जो पकड़ गजेन्द्र के विनाश जैसी प्रतीत होती थी, वास्तव में वही दबाव था जिसने उसके समर्पण को पूर्ण किया — और यही अखण्ड समर्पण है, न कि किसी विशेष शक्ति का आवाहन, जो भगवान का साक्षात् एवं व्यक्तिगत उत्तर खींच लाता है (श्लोक 30-31)।



क्योंकि गजेन्द्र ने किसी अंश-देवता की नहीं अपितु सर्वव्यापक परम भगवान की प्रार्थना की थी, इसलिए स्वयं भगवान श्रीहरि गरुड़ की पीठ पर चक्र लिए शीघ्र सरोवर की ओर आते हैं, दिव्य प्राणियों द्वारा स्तुत होते हुए (श्लोक 30-31)।

क्योंकि गजेन्द्र ने सर्वव्यापी परमतत्त्व की प्रार्थना की, न कि किसी आंशिक देवता की, इसलिए स्वयं भगवान श्रीहरि गरुड़ की पीठ पर चक्र सहित उतरते हैं, शीघ्रता से सरोवर तक लाए जाते हैं और देवताओं द्वारा स्तवन किए जाते हैं (श्लोक 30-31)।

समर्पण की पुकार और उद्धार

आकाश में गरुड़ पर आरूढ़, चक्र उठाए श्रीहरि को देखकर गजराज ने भेंट के रूप में एक कमल लिए अपनी सूँड़ ऊपर उठाई — क्योंकि भगवान के पास कभी रिक्त हाथ नहीं जाना चाहिए — और अत्यन्त पीड़ा और कठिनाई से पूर्ण समर्पण के शब्द उच्चारित किए।

सोऽन्तःसरस्युरुबलेन गृहीत आर्तो
दृष्ट्वा गरुत्मति हरिं ख उपात्तचक्रम् ।
उत्क्षिप्य साम्बुजकरं गिरमाह कृच्छ्रा-
न्नारायणाखिलगुरो भगवन् नमस्ते ॥ ३२ ॥

सोऽन्तःसरस्युरुबलेन गृहीत आर्तो दृष्ट्वा गरुत्मति हरिं ख उपात्तचक्रम् उत्क्षिप्य साम्बुजकरं गिरमाह कृच्छ्रात् नारायणाखिलगुरो भगवन् नमस्ते

अर्थ: सरोवर के भीतर बलवान ग्राह के द्वारा पकड़ा हुआ और अत्यन्त पीड़ित गजराज ने आकाश में गरुड़ पर चक्र उठाए श्रीहरि को देखा। कमल लिए अपनी सूँड़ उठाकर उसने बड़ी कठिनाई से कहा — “हे नारायण, हे अखिल जगत् के गुरु, हे भगवन्, आपको नमस्कार है!” (स्कन्ध 8, अध्याय 3, श्लोक 32)

उस पुकार पर करुणा से द्रवित होकर अजन्मा भगवान तत्काल गरुड़ से उतर पड़े। उन्होंने गजराज को ग्राह सहित जल से बाहर खींच लिया, और वहाँ देखते हुए देवताओं के समक्ष अपने चक्र से ग्राह के मुख को चीरकर उस महान गजराज को मुक्त कर दिया।

तं वीक्ष्य पीडितमजः सहसावतीर्य
सग्राहमाशु सरसः कृपयोज्जहार ।
ग्राहाद् विपाटितमुखादरिणा गजेन्द्रं
संपश्यतां हरिरमूचदुच्छ्रियाणाम् ॥ ३३ ॥

तं वीक्ष्य पीडितमजः सहसावतीर्य सग्राहमाशु सरसः कृपयोज्जहार ग्राहाद् विपाटितमुखादरिणा गजेन्द्रं संपश्यतां हरिरमूचदुच्छ्रियाणाम्

अर्थ: उसे इस प्रकार पीड़ित देखकर अजन्मा भगवान शीघ्र उतरे और करुणावश गजराज को ग्राह सहित सरोवर से ऊपर खींच लिया। तब उपस्थित देवताओं के समक्ष उन्होंने अपने चक्र से ग्राह का मुख चीर दिया और गजेन्द्र का उद्धार किया। (स्कन्ध 8, अध्याय 3, श्लोक 33)

इस प्रकार असहायता की गहराई से की गई प्रार्थना स्वर्ग की ऊँचाई से सुनी गई, और वह दीर्घ संकट कृपा के आलिङ्गन में समाप्त हुआ।

इस अध्याय की प्रमुख शिक्षाएँ

1. भक्ति जन्म-जन्मान्तर तक साथ चलती है। गजेन्द्र उन शब्दों से प्रार्थना करता है जो उसने पूर्वजन्म में राजा इन्द्रधुम्न के रूप में सीखे थे। आध्यात्मिक प्रयास कभी व्यर्थ नहीं जाता; एक जन्म की भक्ति अगले जन्म का आश्रय बन जाती है (श्लोक 1)।
2. सर्वोच्च प्रार्थना भगवान को माँगती है, भगवान से नहीं। गजेन्द्र ग्राह से बचने की याचना नहीं करता; वह अज्ञान के हटने की प्रार्थना करता है और स्वयं भगवान की शरण लेता है। शुद्ध भक्ति हर वर से ऊपर दाता को चाहती है (श्लोक 25, 29)।
3. परमतत्त्व सब नाम-रूप से परे है, फिर भी सबका आश्रय है। यह स्तुति भगवान की महिमा निराकार, वाणी-मन से परे, न देवता न असुर न मनुष्य न पशु — समस्त अस्तित्व के आधार के रूप में गाती है, जिसमें प्रत्येक जीव शरण ले सकता है (श्लोक 2-24)।
4. भगवान समर्पण का उत्तर स्वयं देते हैं। क्योंकि गजेन्द्र ने सर्वव्यापी परमतत्त्व को पुकारा, कोई आंशिक देवता नहीं आया; स्वयं भगवान उतरे। सच्चा समर्पण भगवान का साक्षात् उत्तर खींच लाता है (श्लोक 30-32)।
5. कोई जीव कृपा की पहुँच से बाहर नहीं। एक पशु, फँसा और मरणासन्न, उपस्थित देवताओं के समक्ष भगवान के हाथों उठा लिया जाता है। दिव्य करुणा सबसे विनम्र हृदय की पुकार का उत्तर देती है (श्लोक 33)।

एक भक्तिमय चिन्तन

गजेन्द्र की स्तुति इसीलिए इतनी प्रिय है क्योंकि यह उसके द्वारा कही गई है जिसके पास कुछ भी शेष नहीं। बल से रहित, प्रत्येक सांसारिक सहारे से त्यक्त, जल में डूबता हुआ, वह भगवान से सौदा नहीं करता और न अपना पुराना जीवन वापस माँगता है। वह इसके बजाय उस गहरे बन्धन से मुक्ति माँगता है जिसे उसने अब तक देखा भी न था — अपने वास्तविक स्वरूप को भूल जाने का बन्धन। यही समर्पण की अद्भुत उदारता है: जब जीव देह और उसके सहारों से चिपकना छोड़कर पूर्णतः भगवान की ओर मुड़ता है, तो उसे ज्ञात होता है कि उसका वास्तविक संकट कभी ग्राह था ही नहीं, अपितु आत्मा पर पड़ा अज्ञान का आवरण था। और उस मुड़े हुए हृदय के पास भगवान स्वयं आते हैं। सम्भव है हम कभी किसी दिव्य सरोवर में ग्राह का सामना न करें, पर हम सब काल की मन्द पकड़ का सामना करते हैं। गजेन्द्र हमें सिखाता है कि वही आश्रय सदा पहुँच में है, केवल उन शब्दों की प्रतीक्षा में जो — सीखे हुए या स्मरण किए हुए — हमें घर की ओर मोड़ दें।

एक दैनिक भाक्ते-अभ्यास

आज एक क्षण निकालकर ऐसी प्रार्थना करें जो जगत से कुछ न माँगे — न रक्षा, न लाभ, न किसी विशेष कष्ट का निवारण — अपितु केवल भगवान की निकटता और हृदय से विस्मृति के हटने की। गजेन्द्र की भाँति अपने ध्यान की सरल भेंट अर्पित करें, और धीरे से कहें: “ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।” आपकी प्रार्थना एक बार केवल भगवान के लिए हो, न कि उस वस्तु के लिए जो भगवान दे सकते हैं — और देखें कि वह मुड़ना ही किस प्रकार एक उद्धार बन जाता है।

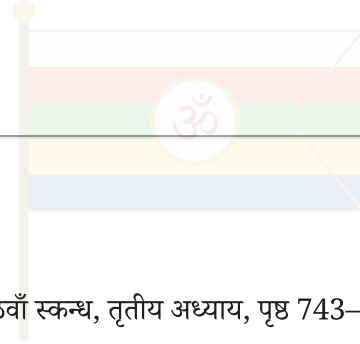
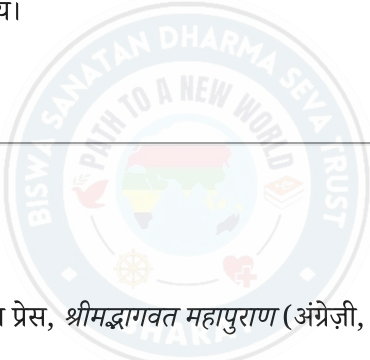
उपसंहार

गजेन्द्र की यह स्तुति इसलिए चिरस्थायी है क्योंकि यह समर्पण को उसके शुद्धतम रूप में दिखाती है: जिस जीव के पास सौदा करने को कुछ शेष नहीं बचा, वह उद्धार नहीं अपितु स्वयं भगवान को माँगता है, और नाम-रूप से परे वह भगवान किसी आंशिक शक्ति के हिलने से पहले ही उस अखण्ड पुकार का साक्षात् उत्तर देते हैं। चाहे हमें कोई भी ग्राह जकड़े — भय, हानि, अथवा काल की मन्द धारा — वही आश्रय सदा निकट है, केवल उस हृदय की प्रतीक्षा में जो प्रत्येक लघु सहारा त्यागकर पूर्णतः उन्हीं की ओर मुड़ने को तैयार हो।

श्रीमद्भागवत का दिव्य ज्ञान हमारे हृदयों में शुद्ध भक्ति जाग्रत करे।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

जय श्री माधव।



सन्दर्भ एवं आभार

- मुख्य संस्करण: गीता प्रेस, श्रीमद्भागवत महापुराण (अंग्रेज़ी, सम्पूर्ण), आठवाँ स्कन्ध, तृतीय अध्याय, पृष्ठ 743–748।
- शृंखला: श्रीमद्भागवत विज्ञान - बिस्वा सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट।
- पण्डित डॉ. श्री काशीनाथ मिश्र के आध्यात्मिक मार्गदर्शन एवं अनुशंसा के अनुरूप प्रस्तुत।

यह लेखक के अपने शब्दों में एक मौलिक, निष्ठापूर्ण पुनर्कथन है, जिसमें संक्षिप्त उद्धृत श्लोक देवनागरी तथा लिप्यन्तरण में दिए गए हैं और उनके अर्थ सारांश-रूप में हैं। यह किसी एक प्रकाशक के निरन्तर अनुवाद अथवा भाष्य का पुनरुत्पादन नहीं है। किसी प्रकाशक से किसी सम्बद्धता अथवा उसके अनुमोदन का संकेत नहीं किया गया है।

॥ हरि ॐ तत्सत् ॥

जय श्री माधव

ऑनलाइन पढ़ें: kalkiabatara.org/hi/blog-srimad-bhagavatam-canto-8-chapter-3-gajendras-prayers-of-surrender-hi.html

श्रीमद्भागवतम् विज्ञम • कल्कि अवतार इंटरनेशनल • बिस्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट

